देवी अहिल्याबाई व्यक्तित्व : बिन्दु से विराट तक

-रमेश शर्मा

देवी अहिल्याबाई का व्यक्तित्व की यह व्यापक शक्ति उन्हें अपने दोनों परिवारों के संस्कार से मिली थी। पिता मनकोजी राव शिन्दे का अधिकांश समय सैन्य अभियान में ही जाता था। वे बहुत कम समय केलिये घर आते थे। घर परिवार के बीच समन्वय और संचालन का सारा काम माता सुशीला बाई के पास ही था। यह सामूहिक परिवार था। सास-ससुर, देवरानी, उनके के बच्चे, सब साथ रहते थे। माता सुशीला बाई अपनी सास से मार्गदर्शन लेकर इस पूरे परिवार समन्वयक करतीं थीं। बड़ों का आदर छोटों को स्नेह करने के इस वातावरण के बीच ही अहिल्याबाई ने अपनी आँख खोली थी। यह सारा वातावरण उनके अवचेतन समाया हुआ था। उन्होंने आरम्भिक शिक्षा चाँडी ग्राम के पुरोहित विद्वान शिवले जी से प्राप्त की थी। शिवले जी गाँव के सभी बच्चों को पढ़ाते थे। इसमें लड़के, लड़की या अन्य कोई सामाजिक भेद नहीं था। इस प्रकार अहिल्याबाई को बड़ो का सम्मान, छोटों से स्नेह, आत्मरक्षा, टोली का समन्वय करने के संस्कार अपनी माता से मिले। तो पुराण कथाओं के माध्यम से सामाजिक समन्वय के संस्कार शिवले जी से मिले। घर का वातावरण और शिवले जी की शिक्षा से उनकी रुचि शिवभक्ति और धार्मिक प्रवचनों में बढ़ी। इन कथाओं ने उनके भीतर सनातन परंपराओं के प्रति गौरव भाव सशक्त बना। अहिल्याबाई की स्मरण शक्ति अनूठी थीं। वे किसी घटना या प्रसंग को एक बार सुनकर और देखकर वे हूबहू वर्णन कर लेतीं थीं। बचपन में अहिल्याबाई ने भी अपनी बाल टोली बना ली थी। इस टोली का समन्वय वे ही करतीं थीं। इसी विशेषता से उन्हे महाराज मल्हारराव होल्कर ने पसंद किया और वे महारानी बनीं। वे कोई बहुत सुन्दर और आकर्षक रंग रूप की नहीं थीं। औसत कदकाठी की थीं। रंग रूप भी सामान्य था। इंदौर के महाराज होल्कर के मन में उनका रंग रूप या सौन्दर्य देखकर बहू बनाने का विचार नहीं आया, वे अहिल्याबाई के बाल टोली का समन्वय का काम देखकर ही प्रभावित हुये और अपने पुत्र से विवाह करने का निर्णय लिया।

जब मल्हारराव होल्कर को लगा कि अहिल्याबाई अपने सभी आंतरिक कार्य सफलता पूर्वक करने लगीं तब आंतरिक व्यवस्था के अन्य कार्य भी उनके माध्यम से ही कहते थे। इसी बीच खाँडेराव होल्कर का निधन हो गया। मल्हारराव जी ने अहिल्याबाई को सती होने से रोका और राजकाज के कुछ अतिरिक्त कार्यों से जोड़ा। हालाँकि मल्हारराव जी ने अपने ही कुटुम्ब के तुकोजीराव होल्कर को अपना दत्तक पुत्र मान लिया था। तुकोजीराव को सेना और राजकाज के वाहरी कामों से जोड़ भी लिया था। पर आंतरिक कार्यों से अहिल्याबाई को जोड़ा। इससे अहिल्याबाई अपने पति के निधन का दुख कुछ कम हुआ और काम में व्यस्त हुईं। मल्हारराव जी को भी एक समर्पित सहयोगी मिला। मल्हारराव जी ने अहिल्याबाई को सूचनाओं के एकत्रीकरण का काम सौंपा। वे संदेश वाहकों के माध्यम से राज्य की समस्त सूचनाएँ एकत्र करतीं और मल्हारराव जी तक पहुंचाती। मल्हारराव जी ने अहिल्याबाई की सलाह से कुछ निर्णय भी लिये। इससे अहिल्याबाई का आत्मविश्वास बढ़ा और प्रशासन व्यवस्था सुदृढ हुई।

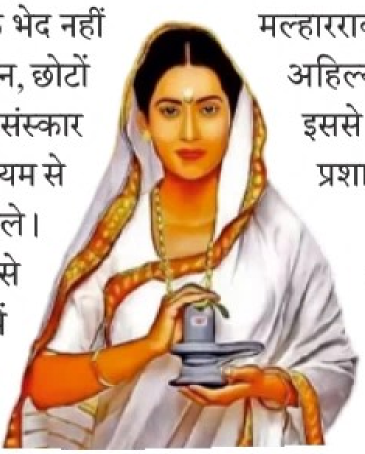

अहिल्याबाई के व्यक्तित्व का निर्माण परिवार के संस्कारों से हुआ और विकास प्रतिभा के प्रोत्साहन से। पिता के घर उन्हें माँ और दादी ने प्रोत्साहित किया। यहाँ यह मान सकते हैं कि अहिल्याबाई अपने माता पिता की इकलौती संतान थीं। अपनी पीढ़ी में सबसे बड़ी भी। इसलिये कहा जा सकता है कि बड़े होने के कारण उनको प्राथमिकता मिली। लेकिन ससुराल का परिवार अपेक्षाकृत बड़ा था। जब अहिल्याबाई विदा होकर ससुराल आईं तब मल्हारराव होल्कर की पत्नि गोतमा बाई की आयु मुश्किल से छत्तीस वर्ष थी। लेकिन मल्हारराव जी ने कुछ दिनों में ही परिवार की आंतरिक व्यवस्था के समन्वय का काम अहिल्याबाई को सौंपा। उनकी प्रतिभा को प्रोत्साहन परिवार से मिला लेकिन काम के लिये अपनी टोली का चयन उन्होंने स्वयं किया। उन्होंने सहयोगी टोली का चयन बचपन में भी किया और राजकाज में भी। मौलिक प्रतिभा, परिवार के संस्कार और सहयोगी चयन की विशेषता ने ही उन्हे विन्दु से विराट बनाया।

आर.एन.आई. पंजीयन क्रमांक - 56376/92

डाक पंजीयन क्रमांक - म.प्र./भोपाल 4-536/2024-26

हिन्दू गर्जना

वर्ष : 32 | अंक : 02, आश्विन / कार्तिक, संवत् 2081 | युगाब्द 5126, अक्टूबर : 2024 | सहयोग राशि : 10 रुपए

www.samvad.in eHinduGarjana eHinduGarjana eHinduGarjana eHinduGarjana

मध्य प्रदेश में स्थित प्रमुख देवियों के मंदिर, जिनके दर्शन के बिना अधुरा है नवरात्र

मांढरे की माता

मांढरे की माता मंदिर ग्वालियर में स्थित है। यह मंदिर 147 साल पुराना है और इसकी स्थापना तत्कालीन महाराजा जयाजीराव सिंधिया ने की थी। कंपू क्षेत्र के कैंसर पहाड़ी पर बना यह भव्य मंदिर स्थापत्य की दृष्टि से बेहद खास है। इस मंदिर में विराजमान अष्टभुजा वाली महिषासुर मर्दिनी मां महाकाली की प्रतिमा अद्भुत और दिव्य है।

बिजासेन देवी मंदिर

इंदौर का बिजासन माता मंदिर में नवरात्रि के दौरान हजारों भक्त आते हैं। बता दें कि इस मंदिर में विराजमान नौ दैवीय प्रतिमाओं को तंत्र-मंत्र का चमत्कारिक स्थान व सिद्ध पीठ माना गया है। मंदिर का निर्माण वर्ष 1760 में शिवाजी राव होल्कर ने करवाया था।

मां चामुंडा

देवी के 52 शक्तिपीठ में से मां चामुंडा, तुलजा दरबार को एक शक्तिपीठ के तौर पर माना जाता है। देवी का ये मंदिर देवास में है। माना जाता है कि देश के अन्य शक्तिपीठों पर मां के अवयव गिरे थे, लेकिन टेकरी पर माता का रक्त गिरा था।

कवलका माता मंदिर रतलाम

श्री कवलका माता मंदिर रतलाम में स्थित है।कहा जाता है कि यहां स्थित मां कवलका, मां काली और काल भैरव की मूर्तियां मदिरापान करती हैं। बता दें कि ये मंदिर लगभग 300 वर्ष पुराना है। यहां स्थित माता की मूर्ति बड़ी ही चमत्कारी है।भक्त मां को प्रसन्न करने के लिए मदिरा का भोग लगाते हैं।

मैहर माता शारदा मां

मैहर शारदा मां के मंदिर के लिए जाना जाता है। यह मंदिर सतना जिले की त्रिकुटा पहाड़ी पर स्थित है। बता दें कि माता के दर्शन के लिए भक्तों को 1063 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। इस मंदिर में मैहर माता के अलावा काली, दुर्गा, गौरी शंकर, शेष नाग, काल भैरवी, हनुमान आदि भी विराजमान हैं।

हिन्दू गर्जना

आश्विन / कार्तिक, संवत् 2081
युगाब्द 5126
वर्ष : 32 | अंक : 02

अक्टूबर : 2024

संपादक
लाजपत आहूजा

कार्यालय
दिनेश जैन
0755-2763768
83598 00080

मुख्य कार्यालय
विश्व संवाद केन्द्र
मध्यप्रदेश
डी -100/45, शिवाजी नगर
भोपाल (म.प्र.) पिन : 462016

Email :
hindugarjanabpl@gmail.com
Web :
www.samvad.in

वैधानिक सूचना

हिन्दू गर्जना में प्रकाशित लेखों एवं विचारों तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र भोपाल होगा।

संपादक की कलम

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अब 100 बरस का होने जा रहा है। संघ एकमात्र दुनिया का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन है, दुनिया का कोई भी देश ऐसा स्वयं से भी संगठन नहीं बना पाया, इस अंक में हमने 100 बरस का होने जा रहा है संघ विषय को कवर स्टोरी के रूप में लिया है। इसके साथ ही इस अंक में देवी अहिल्याबाई 300 वां जन्म जयंती वर्ष की अगली कड़ी में देवी अहिल्याबाई का व्यक्तित्व- बिंदु से विराट तक विषय पर प्रकाश डाला है। यह भी आपको इस अंक में जानने के लिए मिलेगा। साथ ही लाल बहादुर शास्त्री से जुड़े रोचक तथ्य जैसे उनके जीवन कल में 9 साल जेल, जेल में आम लाने पर पत्नी का विरोध, दहेज में ली खादी, जय जवान जय किसान की कहानी, ट्रांसपोर्ट सेक्टर से महिलाओं को जोड़ना आदि विषय आपको जानने को प्राप्त होंगे। महात्मा गांधी जयंती पर विशेष रूप से उनके जीवन से जुड़ी एक कहानी जिसमें स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात दिल्ली में एक शाखा पर स्वयं सेवकों को उन्होंने संबोधित किया था, महात्मा गांधी की जीवन दृष्टि पर हमने कुछ जानकारी देने का इस अंक में प्रयास किया है। इसके साथ ही भोपाल में प्रि-लोकमंथन कार्यक्रम में परंपरागत चिकित्सा पद्धति पर विमर्श के कुछ अंश आप तक पहुंचाये है। दशहरा भी जल्द ही आने वाला है, इसी को देखते हुए मध्यप्रदेश के रतलाम में 6 माह पहले दशहरा मनाने की परंपरा है और मध्य प्रदेश के मंदसौर में रावण को अपना जमाई माना जाता है, इस रोचक विषय को भी आपको जानने के लिए इस अंक में मिलेगा। इसके साथ ही मध्य प्रदेश के खंडवा के 28 मिल उत्तर पूर्व में छोटा गांव, जहां निमाड़ की आस्था के प्रतीक सिंगाजी मेले का आयोजन किया जाता है, इस पर भी आपको जानकारी प्राप्त होगी। साथ ही देश की रियासतों को सरदार पटेल द्वारा जोड़ा ना जाता तो आज भारत का यह नक्शा देखने के लिए नहीं मिलता, आप भी पड़े और जाने लोह पुरुष सरदार पटेल का यह साहसी कार्य। इसके साथ ही इस नवरात्रि जाने मैं दुर्गा के नौ रूप और मध्य प्रदेश में स्थित प्रमुख देवियों के मंदिर जिनके दर्शन के बिना अधूरा है नवरात्र। नवरात्रि के इस पावन पर्व मे जाने पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के जीवन मे देवी माँ पीतमबरा के प्रति अटूट विश्वास, चुनाव प्रचार के पहले पीताम्बरा पीठ में उनके द्वारा किया जाता था विशेष अनुष्ठान। साथ ही जाने महर्षि दयानंद सरस्वती के बारे मे जो एक महान भारतीय दार्शनिक के रूप में भी जाने जाते हैं और इस अंक के माध्यम से जाने शरद पूर्णिमा का वैज्ञानिक आधार, सार समाचार, घर वापसी से जुड़ी कुछ खबरें, बच्चों के लिए कहानी, मध्यप्रदेश के बारे में महत्वपूर्ण सामान्य ज्ञान, माह की स्मरणीय विभूतियां मुख्य व्रत त्योहार एवं दिवस आदि।

100 बरस का होने जा रहा है संघ

-हृदयनारायण दीक्षित
पूर्व विधानसभा अध्यक्ष उत्तरप्रदेश

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ 100 बरस का होने जा रहा है। संघ संप्रति दुनिया का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन है। दुनिया का कोई भी देश ऐसा स्वयंसेवी संगठन नहीं बना पाया। डॉ. हेडगेवार ने इसकी स्थापना विजयदशमी (सन 1925) के दिन की थी। तब से अब तक हजारों मुश्किले झंझावात झेलते हुए संघ लगातार सक्रिय है। संघ की कार्य पद्धति विशिष्ट है इसके बारे में कम लोग जानते होंगे। कई स्वयंभू विद्वान संघ को ब्रेनवाश कर देने वाला संगठन मानते हैं। कई इसे सांप्रदायिक भी कहते हैं। केवल कहते ही नहीं संघ का विरोध करने के लिए हिन्दू विरोधी तमाम घटनाओं में संघ की साजिश बताते हैं, लेकिन संघ अपने सेवा कार्यों में संलग्न रहता है। डॉ. हेडगेवार द्वारा रोपा गया बीज अब विराट वृक्ष बन गया है।

संघ और भाजपा के रिश्तों पर बहसें चलती हैं। तब भाजपा का नाम जनसंघ था। देश की राजनीति में तुष्टिकरण था। अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के दबाव में ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने भारतीय स्वाधीनता की घोषणा (20-2-1947) की। मुस्लिम लीग की अलग मुल्क की मांग पर युद्ध जैसी आक्रामकता थी। कट्टरपंथी अलगाववाद को तुष्टिकरण का पुष्टाहार मिला। देश बंट गया। हजारों हिन्दू मारे गए। महात्मा गांधी की भी हत्या हुई। संघ पर प्रतिबंध लगा। पाकिस्तानी कबाइली हमला (1948) हुआ। तत्कालीन राजनैतिक दल व नेता राष्ट्रवाद से दूर थे। हिन्दुओं के मर्म से दूर थे। एक राष्ट्रवादी दल की आवश्यकता थी। श्री गुरुजी की प्रेरणा से भारतीय जनसंघ की स्थापना (1951) हुई। जम्मू कश्मीर के दो निशान, दो प्रधान, दो विधान का विरोध, गोवध निषेध और समान नागरिक कानून जैसे राष्ट्रवादी मुद्दे गरमाए। सरसंघचालक गुरु जी ने गोवध निषेध व हिन्दू श्रद्धा स्थान को नष्ट करने की प्रवृत्ति पर लिखते (1952) हुए कहा, ''गाय अनादि काल से आराध्य है। समाज विजेता के उन्माद में पराजित जाति को अपमानित करते हुए श्रद्धा स्थानों को नष्ट करना, धन, मान लूटना, मानो विजय आनन्द लेना है।"

तिब्बत पर चीनी कब्जा हुआ गुरु जी ने इसे हृदय विदारक (18 मई 1959) बताया। भारत पर चीन का हमला 1962 में हुआ था। तत्कालीन सरसंघचालक ने दिल्ली में कहा था, "सेना के लोगों को प्रोत्साहन देना चाहिए। उनके परिवारों की सहायता करनी चाहिए। जाति, भाषा और राजनीति सहित सभी मतभेदों को हृदय से हटाएं। हमारा समूचा राष्ट्र और उसके सामने खड़ा शत्रु, केवल इतना ही ध्यान में रखें।" संघ चीन युद्ध के दौरान सरकार के साथ था। राजनैतिक दलों व संघ के ध्येय व लक्ष्यों में भी अंतर है। संघ की दृष्टि में पृथ्वी माता है। भारत माता है। संघ के लोग इसी सेवा में निस्वार्थ भाव से जुटे हैं। संघ के स्वयंसेवकों ने स्वाधीनता संग्राम में हिस्सा लिया था।

लेकिन राहुल गांधी ने संघ के सम्बंध में अपनी समझ में एक मजेदार टिप्पणी की है। उनकी इस टिप्पणी की खासी चर्चा है। उन्होंने कहा है कि, "राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कुछ मतों व भाषाओं को कमतर आंकता है। राहुल गांधी की टिप्पणी निराधार है। राहुल गांधी ने कुछ समय पहले संघ को समझने का प्रयास किया था। उन्होंने कहा था कि संघ से सीधी लड़ाई लड़ने के लिए उपनिषद और गीता पढ़ेंगे। आलोचना बुरी नहीं

होती। प्रत्येक व्यक्ति और संगठन को आलोचना का अधिकार है। लेकिन संघ कार्य पारदर्शी है। कह सकते हैं कि संघ एक ओपन यूनिवर्सिटी है। राष्ट्र का सर्वांगीण विकास व अभ्युदय के लिए संघ के स्वयंसेवक सदा तत्पर रहते हैं। नासमझी में अनेक सुशिक्षित विद्वान भी संघ के आलोचक हैं। तुष्टिकरणवादी वोट बैंक के कारण संघ की निंदा करते हैं।

राष्ट्रीय स्तर के एक वरिष्ठ पत्रकार खुशवंत सिंह से द्वितीय सरसंघचालक म. स. गोलवलकर की भेंट हुई थी। उनसे मिलने के बाद खुशवंत सिंह ने लिखा था, "कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनको बिना समझे ही हम घृणा करते हैं। ऐसे लोगों की मेरी सूची में गुरु गोलवलकर प्रथम थे।" खुशवंत सिंह ने 'आरएसएस एंड हिन्दू मिलिटरिज्म' के हवाले से कई सवाल पूछे। ईसाइयों के सम्बंध में पूछे गए सवाल के जवाब में गुरु जी ने कहा, "धर्मांतरित करने के तरीकों के अलावा हमारा उनसे कोई विरोध नहीं है।" मुसलमानों के बारे में कहा कि, "मुसलमानों को भारतीयता के प्रवाह में मिल जाना चाहिए।" ईरानी मूल के पत्रकार डॉ. जिलानी से कहा, "पाकिस्तान ने पाणिनि की 5000वीं जयंती मनाई है। पाणिनि पूर्वज हैं। भारत के मुसलमान पाणिनि, व्यास और वाल्मीकि आदि को महान पूर्वज क्यों नहीं मानते? भारतीय राष्ट्रवाद प्राचीन धारणा है। यहां राष्ट्र संस्कृति आधारित है। इस राष्ट्रवाद के स्रोत वैदिक वांगमय में हैं। ऋग्वेद, अथर्ववेद में राष्ट्र शब्द की आवृत्ति कई बार हुई है। स्वयंभू विद्वान स्वाधीनता संग्राम के दौरान विकसित राष्ट्रभाव को अलग मानते हैं और सनातन राष्ट्रवाद को कमतर। स्वाधीनता आंदोलन हर तरह से प्रत्येक भारतवासी को प्रिय है। स्वाधीनता आंदोलन के आदर्श व मूल्य आदर योग्य हैं।

दुर्भाग्य से भारत को आजादी मिलने के बाद नए सत्ताधीश राष्ट्रवाद से पृथक हो गए। बंकिम चन्द्र चटर्जी द्वारा लिखी गई अंतर्राष्ट्रीय ख्याति की कविता 'वंदे मातरम' के एक हिस्से को संविधान सभा ने राष्ट्रगीत घोषित किया था। लेकिन स्वाधीनता के बाद अनेक पंथिक मजहबी संस्थाओं ने वंदे मातरम गाने से इनकार किया, लेकिन संघ के कार्यक्रमों में वंदे मातरम प्रशंसा पूर्वक गाया जाता है। आज भारत के कोने-कोने में वंदे मातरम का गान होता है। वंदे मातरम गाने से इनकार करने वाले संगठन अकड़ते रहे। संघ ने सबको साथ लेते हुए भारतीय राष्ट्रवाद को सर्वोपरि बताया है। सांस्कृतिक प्रतीकों को सम्मान देने की परंपरा संघ ने यत्र तत्र सर्वत्र प्रसारित की। संघ की सांगठनिक क्षमता बड़ी है। उच्च शिक्षित युवा संघ कार्य को राष्ट्रीय दायित्व मानते हैं। वे उच्च शिक्षा से प्राप्त अवसरों की चिन्ता नहीं करते। वे घर परिवार छोड़कर संघ कार्य में जुटते हैं। वे संघ का अनुशासन मानते हैं और देश के लिए काम करते हैं। संघ राजनैतिक दल की तरह सदस्यता नहीं कराता। संघ के पास सैकड़ों पूर्णकालिक कार्यकर्ता हैं। दुनिया का कोई भी देश ऐसे सुशिक्षित समर्पित कार्यकर्ताओं का स्वयंसेवी संगठन नहीं बना पाया।

पूज्य. डॉ. हेडगेवार | पूज्य. गुरुजी | पूज्य. बालासाहब देवरस | पूज्य. रज्जू भईया | पूज्य. सुदर्शनजी | पूज्य. डॉ. मोहन भागवत

आने वाली विजयादशमी के दिन संघ 100 बरस का हो जाएगा। संघ शाखा पर प्रार्थना में लक्ष्य सुस्पष्ट हैं। **परं वैभवं नेतुमेतत् स्वराष्ट्रं, समर्था भवत्वाशिषा ते भृशम्-** यहां राष्ट्र का परम वैभव ही संघ का लक्ष्य है। संघ के कार्यकर्ता सुबह उठते ही भारत भक्ति स्तोत्र पढ़ते हैं। इस स्तोत्र में अनेक महापुरुषों के मध्य डॉक्टर अम्बेडकर को भी प्रणाम किया गया है। जाति-पाति, पथ, मत और मजहब से भिन्न राष्ट्र की सर्वोपरिता संघ की मान्यता है। संघ कार्य देश के सनातन विचार प्रवाह का हिस्सा है। राष्ट्रवाद से ओत प्रोत कार्यकर्ताओं का निर्माण होता रहता है। संघ राष्ट्रवादी संस्कार देने के काम में संलग्न है। संघ के कार्यकर्ता निस्वार्थ भाव से काम करते हैं।